

राष्ट्रीय संगोष्ठी शुरू

मात्र कल्पना नहीं है साहित्य : डॉ. वीणा ठाकुर स्वतंत्रता संग्राम : मैथिली साहित्य-संस्कृति ओ दर्शन विषय पर चर्चा

संवाददाता | एजक्यूशनल ब्यूग

साहित्य मात्र कल्पना नहीं है। यह हमारा सामाजिक इतिहास भी है। साहित्य में समाज निहित होता है।

यह बात ने सुप्रसिद्ध साहित्यकार प्रोफेसर डॉ. वीणा ठाकुर ने कही।

वे शुक्रवार को स्वतंत्रता संग्राम : मैथिली साहित्य-संस्कृति ओ दर्शन विषयक दो दिवारीय राष्ट्रीय संगोष्ठी की अध्यक्षता कर रही थीं। कार्यक्रम का आयोजन ठाकुर प्रसाद बहाविद्यालय, मध्येपुरा और साहित्य अकादमी, नई दिल्ली के संयुक्त तत्त्वावधान में किया गया।

उन्होंने कहा कि साहित्य एवं समाज दोनों एक-दूसरे को प्रभावित करते हैं। यह बात मैथिली साहित्य एवं मैथिल समाज पर भी लागू होता है। मैथिली साहित्य सामाज्य जब का साहित्य है। यह समाज से बिकट रूप से संबंधित है।

उन्होंने कहा कि मैथिली साहित्य-संस्कृति एवं दर्शन ने स्वतंत्रता-संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। स्वतंत्रता संग्राम में मैथिली के साहित्यकार अन्य साहित्यकारों से पीछे नहीं रहे हैं।

विषय प्रधार्ता करते हुए मैथिली परामर्श मंडल के संयोजक अशोक कुमार ज्ञा 'अविचल' ने कहा कि मध्यूरा संस्कृति एवं दर्शन विदेह की अवधारणा से पूर्णत है, इसमें दासता के लिए कोई गुणझड़ा नहीं है। यही कारण है कि हमारे कुछ राजा एवं जिम्मेदारियां अंगेजों के साथ रहे हों। लैकिन हमारा संपूर्ण जनमानस संपूर्ण जनमानस अंगेजों के विरुद्ध भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में शामिल रहा है।

उन्होंने कहा कि मैथिला के साहित्यकारों ने आजादी की लड़ाई में महत्वी भूमिका निभाई है। लक्जीनाय जो साईं, रुग्नलाल दास, रामस्वरूप दास आदि के जीतों व भजनों में राष्ट्रीय वेतना का स्वर बरकूबी सामने आया है। तलाक की लोक परंपरा उपन्यास एवं काव्य परंपरा राष्ट्रीय अंदोलन में सक्रिय रही है। छेदी ज्ञा द्विजवर,



यदुनाथ ज्ञा यदुवर, राघवाचार्य, भवप्रीतानंद और ज्ञा आदि की कविताओं ने 1919 से 1947 तक राष्ट्रीय अंदोलन को धार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

बीज वक्तव्य देते हुए साहित्यकार डॉ. ललितेश मिश्र ने कहा कि मैथिली साहित्य में स्वतंत्रता संग्राम से संदर्भित साहित्य का अभाव नहीं है। लैकिन मैथिली इतिहास के लेखकों ने इस और पर्याप्त व्यायाम नहीं दिया और मैथिली साहित्यकारों के साथ व्यायाम नहीं किया। इतिहास की पुस्तकों में मैथिली साहित्य में उपरियत स्वतंत्रता के स्वर को जैसा स्थान मिलना चाहिए था, वह नहीं मिला।

उन्होंने इस संदर्भ में विशेष रूप से 1911 में प्रकाशित मैथिली गीत कुसुम की चर्चा की और बताया कि यह स्वतंत्रता की वेतना के संदर्भ में असमी, तमिल एवं बंगाल सहित किसी भी भारतीय भाषा के समकक्ष है। आधुनिक मैथिली साहित्य में राष्ट्रीय क्षेत्रों से आत्मप्रेत मैथिली रघुनाथ हैं, उतनी अन्यत्र कहीं नहीं हैं।

स्वागत वक्तव्य देते हुए साहित्य अकादमी, नई दिल्ली के उपराजित एवं सुरेता बाबू ने बताया कि यह आयोजन आजादी के अमृत महोत्सव वर्ष में आयोजित किया जा रहा है। इसमें प्रस्तुत सभी आलेखों को पंद्रह अंगस्त तक प्रस्तुत के रूप में प्रकाशित किया जाएगा।

सांस्कृतिक आ बौद्धिक योगदान विषयक आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि मैथिला महज एक भौगोलिक झकाई नहीं, बरन् एक सांस्कृतिक झकाई है।

द्वितीय सत्र

द्वितीय सत्र में अध्यक्ष डॉ. अशोक कुमार ज्ञा 'अविचल' ने स्वतंत्रता संग्राम- मैथिली कथा साहित्य विषय पर विचार व्यक्त किया। डॉ. के. पी. यादव ने स्वतंत्रता संग्राम में धधपुरा आ पूर्णियाक साहित्यक, सांस्कृतिक आ बौद्धिक योगदान और सदाबद्ध यादव ने भारत छोड़ो आबद्दोल आ भैथिली साहित्य औ समाज विषयक आलेख-पाठ किया।

इस अवसर पर सिंडिकेट सदस्य डॉ. रामनरेश सिंह, पूर्व विभागाध्यक्ष डॉ. अमोल राय, प्रधानाचार्य डॉ. परमानंद यादव, डॉ. पी. ए. पी. यादव ने स्वतंत्रता संग्राम में धधपुरा आ पूर्णियाक साहित्यक, सांस्कृतिक आ बौद्धिक योगदान और सदाबद्ध यादव ने भारत छोड़ो आबद्दोल आ भैथिली साहित्य औ समाज विषयक आलेख-पाठ किया।

दूसरे दिन होगा दो सत्र

दूसरे दिन शनिवार को पूर्व दस बजे से तृतीय एवं अ. बारठ बजे से चतुर्थकानीकी सत्र होगा। तृतीय सत्र में सत्राध्यक्ष ताराघांड विद्योगी (स्वतंत्रता संग्राम आ मैथिली सब्ना साहित्य), अजीत मिश्र (स्वतंत्रता संग्राम आ मैथिली काव्य साहित्य) एवं डॉ. उपेन्द्र प्रसाद यादव (स्वतंत्रता संग्राम आ मैथिलीक उपन्यास) का आलेख पाठ होगा। चतुर्थ सत्र में सत्राध्यक्ष डॉ. रामनरेश सिंह (स्वतंत्रता संग्राम आ कोशी परिसर), डॉ. अमोल राय (मैथिली लोक साहित्य आ स्वतंत्रता संग्राम) एवं रवींद्र कुमार चौधरी (स्वतंत्रता संग्राम आ मैथिली नाट्य साहित्य) अपने-आपने आलेख प्रस्तुत करेंगे।

संगोष्ठी • ठाकुर प्रसाद महाविद्यालय मधेपुरा और साहित्य अकादमी नई दिल्ली द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित किया गया कार्यक्रम **मैथिली साहित्य संस्कृति व दर्शन की स्वतंत्रता संग्राम में विशेष भूमिका**

भास्कर न्यूज | मधेपुरा

साहित्य मात्र कल्पना नहीं है। यह हमारा सामाजिक इतिहास भी है। साहित्य में समाज निहित होता है। इसे सुप्रसिद्ध साहित्यकार प्रोफेसर डॉ. वीणा ठाकुर ने कही। वे शुक्रवार को स्वतंत्रता संग्राम: मैथिली साहित्य-संस्कृति व दर्शन विषयक दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी की अध्यक्षता कर रही थीं। कार्यक्रम का आयोजन ठाकुर प्रसाद महाविद्यालय, मधेपुरा और साहित्य अकादमी, नई दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में किया गया।

उन्होंने कहा कि साहित्य एवं समाज दोनों एक-दूसरे को प्रभावित करते हैं। यह बात मैथिली साहित्य एवं मैथिली समाज पर भी लागू होता है। मैथिली साहित्य सामान्य जन का साहित्य है। यह समाज से निकट रूप से संबंधित



शुक्रवार को अपना विचार व्यक्त करते डॉ. वीणा ठाकुर व मंच पर मौजूद अन्य।

है। उन्होंने कहा कि मैथिली साहित्य-संस्कृत एवं दर्शन ने स्वतंत्रता-संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। स्वतंत्रता संग्राम में मैथिली के साहित्यकार अन्य साहित्यकारों से पीछे नहीं रहे हैं। विषय प्रवर्तन करते हुए मैथिली परामर्श मंडल के संयोजक अशोक कुमार झा

'अविचल' ने कहा कि मथुरा संस्कृति एवं दर्शन विदेह की अवधारणा से प्रेरित है, इसमें दास्तां के लिए कोई गुंजाइश नहीं है। यही कारण है कि हमारे कुछ राजा एवं जिम्मेदारियां अंग्रेजों के साथ रहे हों। लेकिन हमारा संपूर्ण जनमानस अंग्रेजों के विरुद्ध भारतीय स्वतंत्रता

संग्राम में शामिल रहा है। बीज वक्तव्य देते हुए साहित्यकार डॉ. ललितेश मिश्र ने कहा कि मैथिली साहित्य में स्वतंत्रता संग्राम से संदर्भित साहित्य का अपाव नहीं है। लेकिन मैथिली इतिहास के लेखकों ने इस ओर पर्याप्त व्यान नहीं दिया और मैथिली साहित्यकारों के साथ न्याय नहीं किया।

इतिहास की पुस्तकों में मैथिली साहित्य में उपस्थित स्वतंत्रता के स्वर को जैसा स्थान मिलना चाहिए था, वह नहीं मिला। स्वागत वक्तव्य देते हुए साहित्य अकादमी, नई दिल्ली के उपसंचिव एन. सुरेश बाबू ने बताया कि यह आयोजन आजादी के अमृत महोत्सव वर्ष में आयोजित किया जा रहा है। इसमें प्रस्तुत सभी आलेखों को पढ़ अगस्त तक पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया जाएगा।

काल में मिथिला एवं मैथिली सब दृष्टि से रहा है आगे : डॉ. जगदीश

इस अवसर पर मुख्य अतिथि पूर्व विभागाध्यक्ष डॉ. जगदीश नारायण प्रसाद ने कहा कि प्राचीन काल में मिथिला एवं मैथिली सब दृष्टि से आगे रहा है। सत्र संचालन उप कुलसंचिव (अकादमिक) डॉ. सुशांत शेखर और धन्यवाद ज्ञापन प्रधानाचार्य डॉ. कैपी यादव ने की। मौके पर सिंडिकेट सदस्य डॉ. रामनरेश सिंह, पूर्व विभागाध्यक्ष डॉ. अमोल राय, प्रधानाचार्य डॉ. परमानंद यादव, डॉ. पी.एन. पीयूष, डॉ. जवाहर पासवान, डॉ. अभय कुमार उपस्थित थे।

दूसरे दिन होगा दो सत्र दूसरे दिन शनिवार को पूर्वाह्न दस बजे से तृतीय एवं अपराह्न बारह बजे से चतुर्थ तक नीकी सत्र होगा। तृतीय सत्र में सत्राध्यक्ष ताराचंद विठोगी (स्वतंत्रता संग्राम व मैथिली सन्त साहित्य), अजीत मिश्र (स्वतंत्रता संग्राम आ मैथिली काव्य साहित्य) एवं डॉ. उपेंद्र प्रसाद यादव (स्वतंत्रता संग्राम आ मैथिलीक उपन्यास) का आलेख पाठ होगा।

मात्र कल्पना नहीं है साहित्य : डा. वीणा ठाकुर

ठाकुर प्रसाद महाविद्यालय में दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का हुआ शुभारंभ, आज होगा समाप्ति

संबाद सूत्र, सिंहशर (मध्येरा) :
साहित्य मात्र कल्पना नहीं है। यह हमारा सामाजिक इतिहास भी है। साहित्य में समाज निहित होता है। यह आत सुप्रसिद्ध साहित्यकार प्रोफेसर डा. वीणा ठाकुर ने कहा। वह शुक्रवार को स्वतंत्रता संग्राम : मैथिली साहित्य-संस्कृति ओ दर्शन विश्ववक द्वे दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी की अद्यक्षता कर रही थी। कार्यक्रम का आयोजन ठाकुर प्रसाद महाविद्यालय और साहित्य अकादमी, नई दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में किया गया।

उन्होंने कहा कि साहित्य व समाज दोनों एक-दूसरे को प्रभावित करते हैं। यह आत मैथिली साहित्य व मैथिल समाज पर भी लागू होता है। मैथिली साहित्य सामान्य जन का साहित्य है। यह समाज से निकट रूप से संबंधित है। मैथिली साहित्य-संस्कृति एवं दर्शन ने स्वतंत्रता-संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। स्वतंत्रता संग्राम में मैथिली के साहित्यकार अन्य साहित्यकारों से पाञ्च नहीं रहे हैं।

विश्व प्रवर्तन करते हुए मैथिली परामर्श मंडल के संयोजक अशोक कुमार झा अविचल ने कहा कि मध्युरा संस्कृति व दर्शन विदेह की अवधारणा से प्रेरित है, इसमें दास्तां के लिए कोई गुंजाइश नहीं है। यही कारण है कि हमारे कुछ राजा व जिम्मेदारियों



अंग्रेजों के साथ रहे हो। लेकिन हमारा संपूर्ण जनमानस संपूर्ण जनमानस अंग्रेजों के विरुद्ध भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में शामिल रहा है।

बीज वक्तव्य दोतो हुए साहित्यकार डा. ललितेश मिश्र ने कहा कि मैथिली साहित्य में स्वतंत्रता संग्राम से संदर्भित साहित्य का अभाव नहीं है। मैथिली इतिहास के लेखकों ने इस ओर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया और मैथिली साहित्यकारों के साथ न्याय नहीं किया। इतिहास की पुस्तकों में मैथिली साहित्य में उपस्थित स्वतंत्रता के स्वर को जैसा स्थान मिलना चाहिए।

कार्यक्रम की शुरुआत मंगलाचरण (जय-जय ऐरवा) के साथ हुई। अतिथियों का अंगवस्त्रम, पुष्पगुच्छ व पाग से स्वागत किया गया। स्नेह कुमारी, चंद्रा किरण रेना एवं डा. रेशम कुमारी ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया। उद्घाटन समारोह के बाद



टीपी कालेज में कार्यक्रम को संवादित करती डा. वीणा ठाकुर • जागरण

प्रथम पूर्व द्वितीय तकनीकी सत्र में आलेखों की प्रस्तुति हुई। इस अवसर पर मुख्य अतिथि पूर्व विभागाध्यक्ष डा. जगदीश नारायण प्रसाद ने कहा कि प्राचीन काल में मिथिला व मैथिली सब दृष्टि से आगे रहा है, लेकिन बाद में गुरुनीतिक कारणों से इसकी उपेक्षा हुई है। इस अवसर पर सिडिके सदस्य डा. रमनरेश सिंह, पूर्व विभागाध्यक्ष डा. अमौल राय, प्रधानाचार्य डा. परमानंद यादव, डा. पीपन पीयूष, डा. जवाहर पासवान, डा. अभय कुमार, कै. गौतम कुमार, ल. गुडू कुमार, कपिलदेव यादव, डा. जावेद अंसारी, डा. नरेंद्र नाथ झा, डा. रविंद्र कुमार चौधरी, सारंग तन्दय, सौरभ कुमार चौहान, डा. अशोक कुमार, गेविंद कुमार, डा. सुमंत राव, डा. मिलिंश कुमार, मु. नंदीम अहमद अंसारी, डा. अमिताभ कुमार, गजीव कुमार, विकास कुमार, सुधा कुमारी, ममता कुमारी, रानी, रेखा मी कुमारी, सुप्रिया सुमन, अलका कुमारी, डा. स्वर्ण मणि, डा. रेणु कुमारी, डा. सुशांत कुमार, राज कुमार झा, डा. बलबीर कुमार झा आदि उपस्थित थे।



बीएनएमयूः मैथिली साहित्य-संस्कृति एवं दर्शन ने स्वतंत्रता-संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई

मैथिली साहित्य सामान्य जन का साहित्य है

संगोष्ठी

■ साहित्य व समाज दोनों एक-दूसरे को प्रभावित करते हैं
■ स्वतंत्रता संग्राम : मैथिली साहित्य-संस्कृति औ दर्शनविषय पर चर्चा

1919 से 1947 तक राष्ट्रीय आदोलन को दिया धार

मध्यपुर, निज प्रतिनिधि। बीएनएमयू के टीपी कॉलेज में साहित्य अकादमी और टीपी कॉलेज के संयुक्त तत्त्वावधान में दो दिवसीय संगोष्ठी का शुभारंभ हुआ। स्वतंत्रता संग्राम : मैथिली साहित्य-संस्कृति ओ दर्शन विषय पर चर्चा में साहित्यकार प्रो. वीणा ठाकुर ने कहा कि साहित्य मात्र कल्पना नहीं है। वह हमारा सामाजिक इतिहास भी है। साहित्य में समाज निहित होता है। उन्होंने कहा कि साहित्य एवं समाज दोनों एक-दूसरे को प्रभावित करते हैं। वह चार मैथिली साहित्य एवं मैथिल समाज पर भी लागू होता है।

मैथिली साहित्य सामान्य जन का साहित्य है। वह समाज से निकट रूप से संबंधित है। उन्होंने कहा कि मैथिली साहित्य-संस्कृति एवं दर्शन ने स्वतंत्रता-संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। स्वतंत्रता संग्राम में मैथिली के साहित्यकार अन्य साहित्यकारों से पीछे नहीं रहे हैं। विषय प्रवर्तन करते हुए मैथिली परामर्श मंडल के संयोजक अधिकारी कुमार झा अविचल ने कहा कि मध्युग संस्कृति एवं दर्शन विदेश की अवधारणा से प्रेरित है, इसमें दासता के लिए कोई मुंजाइश नहीं है। वही कहा है कि हमारे कुछ गजा एवं जिम्मेदारियां अधिजों के साथ रहे हों। लेकिन हमारा संपूर्ण जनमानस संपूर्ण



टीपी कॉलेज में साहित्य अकादमी द्वारा आयोजित संगोष्ठी में मौजूद विद्वान। • हिन्दुस्तान

पूर्व विभागाध्यक्ष डॉ. अमोल गय, प्रधानाचार्य डॉ. परमानंद यादव, डॉ. पीएन पीयूष, डॉ. जवाहर पासवान, डॉ. अभय कुमार, कै. गौतम कुमार, ले. गुडु कुमार, कपिलदेव यादव, डॉ. जायेद असारी, डॉ. नरेन्द्र नाथ झा, डॉ. गविन्द कुमार चौधरी, सारंग तनव, सौरभ कुमार चौहान, डॉ. अशोक कुमार, गोविंद कुमार, डॉ. सुमंत गव, डॉ. मिथिलेश कुमार, मो. नदीम अहमद अंसारी, डॉ. अमिताभ कुमार, गजीव कुमार, विकास कुमार, सुधा कुमारी, ममता कुमारी, गनी, रेखा कुमारी, सुष्मिता सुमन, अलकाकुमारी, डॉ. स्वर्ण मणि, डॉ. रेणु कुमारी, डॉ. सुर्यांत कुमार, राज कुमार झा, डॉ. बलबीर कुमार झा

आदि उपस्थित थे। इतिहास की पुस्तक में मैथिली की नहीं यिला सम्बन्ध स्थान: ललितेश टीपी कॉलेज में आयोजित गढ़ीय संगोष्ठी में बीज वक्तव्य देते हुए साहित्यकार डॉ. ललितेश प्रिय ने कहा कि मैथिली साहित्य में स्वतंत्रता संग्राम से संदर्भित साहित्य का अभाव नहीं है। लेकिन मैथिली इतिहास के लेखकों ने इस ओर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया और मैथिली साहित्यकारों के साथ न्याय नहीं किया। इतिहास की पुस्तकों में मैथिली साहित्य में उपस्थित स्वतंत्रता के स्वरको जैसा स्थान मिलना चाहिए था, वह नहीं मिला। उन्होंने इस संदर्भ में विशेष रूप से 1911 में प्रकाशित मैथिली गीत कुसुम

की चर्चा की और बताया कि यह स्वतंत्रता की चेतना के संदर्भ में असारी, तमस्त एवं बंगला सहित किसी भी भासीय भाषा के साहित्य के समकक्ष है। आधुनिक मैथिली साहित्य में गढ़ीय वेदों से ओतप्रोत जितनी रचनाएँ हैं, उन्हीं अन्य कहीं नहीं हैं। स्वागत वक्तव्य देते हुए साहित्य अकादमी, नई दिल्ली के उपसचिव एन. सुरेश बाबू ने बताया कि यह आयोजन अजादी के अमृत महोत्सव वर्ष में आयोजित किया जा रहा है। इसमें प्रस्तुत सभी आलेखों को पंद्रह अगस्त तक पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया जाएगा।

राजनीतिक कारणों से हुई उपेक्षा: जगदीश: संगोष्ठी में पूर्व विभागाध्यक्ष

वीटिक योगदान विषयक आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि मिथिला महज एक भौगोलिक इकाई नहीं, वरन् एक सारकृतिक इकाई है। द्वितीय सत्र में अध्यक्ष डॉ. अशोक कुमार झा अविचल ने स्वतंत्रता संग्राम: मैथिली कथा साहित्य विषय पर विचार व्यक्त किया। डॉ. केपी यादव ने स्वतंत्रता संग्राम में मध्यपुरा आपूर्णियाक विषयक आलेख-पाठ किया।

डॉ. जगदीश नायक प्रसाद ने कहा कि प्राचीन काल में मिथिला एवं मैथिली सब दृष्टि से आगे रहा है। लेकिन बाद में राजनीतिक कारणों से इसकी उपेक्षा हुई है। हमारे सभी रूप खो गया। हमें उन खोए रहने की खोज करनी है। हमें यह सोचना है कि हम हम कौन थे क्या हैं और क्या होंगे अभी। सत्र संचालन उप कुलसचिव (अकादमिक) डॉ. सुधांशु शेखर और धनवाद झापन प्रधानाचार्य डॉ. केपी यादव ने किया। कार्यक्रम की शुरुआत मंगलाचरण (जय-जय पैरवी) के साथ हुई। स्नेहा कुमारी, चंद्रा किरण रीना एवं डॉ. रेशम कुमारी ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया।

मैथिली साहित्य, सामान्यजन का है साहित्यः प्रोवीणा

प्रतिनिधि, माणेपुरा

साहित्य मात्र कल्पना नहीं है बल्कि यह हमारा सामाजिक इतिहास भी है, साहित्य में यामाज विदित होता है, जब जात सुप्रेरित साहित्यकार प्रेरणा उत्कृष्ट ने कही, वे शुक्रवार की स्वर्णप्रतीता सांगमः पैथिलै साहित्य-संस्कृती औ दर्शन विषयक दो दिवसीय गण्डीय संगोष्ठी भी अव्याहारा कर रही थीं, कार्यक्रम कर आयोजन तकुरु प्रसाद मध्याविद्युतलय व साहित्य अकादमी नई हिल्ली के संसद कालाघाटमें में किए गए, प्रो वैष्ण उत्कृष्ट ने कहा कि साहित्य व सभाजन दोनों एक-दूसरे को प्रभावित करते हैं, यह जात मौखिकी साहित्य व मैथिल समाज पर भी लागू होता है, मैथिली साहित्य सामृद्ध्य जन कर साहित्य है, यह यामाज से निकट क्षय से बचावित है, उनके निकट कहा कि मैथिली साहित्य-

संस्कृति व लालन ने समर्पिता-संज्ञाम में
महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। सकर्तव्या
संग्राम में पैदलियों के साहित्यकार अन्य
उत्तरियिकारों से पीछे नहीं रहे हैं।
ठासाट लोकों जनसाकार अंग्रेजों के
विश्व भारतीय टकरावता संघाम में
रहा आगिल : पैदलिये पश्चाम गंडल के
संयोजक अंग्रेज कुमार द्वा अधिकार ने
कहा कि मध्यूष संस्कृति व लालन विदेश
की अवधारणा से प्रेरित है, इसमें दस्तों के
लिए कोई मुंजदृश नहीं है, यही कारण है
कि लालन कुछ राजा व विद्यमारिया,
अंग्रेजों के सब रो हो, लैंकन तथा
संस्कृत जनसाकार अंग्रेजों के विश्व
भारतीय स्वतंत्रता संघाम में आगिल रहा है,
मिथिला के साहित्यकारों ने अजायदी
की ललहाई में मात्री भूमिका निभाई है,
खालियकार डालालितों पिंड ने कहा कि
पैदलिये स्वाहित्य में सकर्तव्या संघाम से
संबंधित सामित्र वा अभ्यन्त नहीं है,



ਪਿਆਸੀ ਹ ਪਾਂਧੀ ਦੀ ਰਾਗਪੁਰ ਮਦੀ ਸਾ.

लैंडिकेन विद्याली श्रीनाथस के लेखकोंने इस ओर प्रधानत ध्यान नहीं दिया व पैदेशी महात्मागणों के भाषण लक्ष्य नहीं किया। इतिहास की पुस्तकों में मैत्रिकी महात्मा में उपस्थित स्वतंत्रता के स्वर को जैसा स्वान मिळाना चाहिए था, वह नहीं मिला। प्रथम तरफ आलोचना को 15 प्रगति तक पुलक के रूप में किया जातेगा प्राप्तिक्रिया: शारित्र अकादमी नई दिल्ली के डायरेक्टर एवं संस्कार बाचू ने बताया

के बाद आयोजन आयावि के अप्रृत
कर्तोत्पत्ति वर्ष में आयोजित किया जा रहा
है, इसमें प्रस्तुत सभी उपलब्धों को 15
अगस्त तक फ्रेसल के साथ में प्रवाहित
कर्त्तव्य जड़वेगा, पूर्व विभागान्वय हा
वागदीन नवाचारण प्रसाद ने जहां कि
विशेषकाल में निखिला वृमधिली सच
दृष्टि से अग्र रहा है, सेक्विन छढ़ म
उत्तरान्तिक कारणों से द्वयावी उपरा हुई
है, हमारा सभी रूप खो गया, हमें उन



मीके पार उपरियत विषय व अवैधि।

देखें रत्ने की सूचित करने हैं, सबसे पहला ताप कुलमध्यिक अकार्डिमिक द्वारा उपयोग लेखन व प्रयोगाद इसने प्रचारावाह के पथ मार्गदर्शन ने किया। उद्धरण समाजोंके बाद प्रथम व द्वितीय तकनीकी सत्र में जालेष्टों की समर्पित हुई। प्रथम तकनीकी सत्र में लेखकों द्वारा बोला गया टाक्कुर ने स्वतंत्रता प्राप्ति : ऐश्वर्यी गौत-साहित्य की चर्चा की। द्वारा संज्ञय कुपार प्रिया ने गिरिधरलक्ष्मी आदि किया। कुमार मीठिया अवलोकन संघात की।

दार्शनिक चिन्तन आ स्वतंत्रता पर विचार व्यक्त किया। विद्युत ने स्वतंत्रता संदर्भ में विधिवाल भास्मालीक आपोगीदार विषयक आवेद्य प्रस्तुत तीर्तीय सदृश में अवधार द्वारा अशोक ने अधिकाल ने स्वतंत्रता सामाजिक व्यापार व्यापार विचार किया। द्वारा कौपी वादव ने स्वतंत्रता में मध्येष्टा आ पुर्णिकाक

तात्त्विक, मर्मसूक्ष्मिक आ चार्डिक
यदान और सदाचार यादव ने भासु कोहो
टेलेवन आ मैरिलैंड साहित्य औ समाज
प्रबल उत्तरेश्वर-उठ चिया, पौरों पर
प्राइवेट सदाचार ता बग्गरेस्ट रिक, पूर्व
भाग्याप्ति ता अमेल यश, ता परमानन्द
दद, ता पीटन एंप्ली, ता जयाच
साधान, ता अधर कुमार, के गौतम
मार, ले मुख कुमार, कल्पितदेव यादव,
जाकें असारी, ता नरेंद्र नव इन, ता
प्रियंका कुमार चौधरी, खारंग तनय, हार्दिक
मार चौधरी, ता अशोक कुमार, गोविंद
मार, ता सुमेता राव, ता चिंधिनेश
मार, जो नदीम अहमद असारी, ता
गिरिताम कुमार, यजोती कुमार, विकास
मार, मुखा कुमारी, ममता कुमारी, रुक्मी
कुमारी कुमारी, मुमिंका मुमन, अलक्ष्म
मारी, ता स्वर्ण मणि, ता रुचि कुमारी, ता
शोभा कुमार, राज कुमार इन, ता कलंबिक
मार इन अभिन्न प्रतिष्ठान थे।

साहित्य अकादमी, नई दिल्ली व ठाकुर प्रखाद महाविद्यालय, मथुरा पुरा के तत्वावधान में राष्ट्रीय संगोष्ठी शुरू

लोकवाद संवादशक्ति, मथुरा।

साहित्य मात्र कानून नहीं है। वह इमए साम्बालिक हीतास भी है। साहित्य में समाज निवार होता है। वह जात ने मुख्यमंद साहित्यकार प्रोफेसर डॉ. चौण ठाकुर ने कहा।

वे गुजरात की स्वतंत्रता संघात मैंचली साहित्य-संस्कृति और दर्शन विवरक द्वे विशेष राष्ट्रीय संवेदी वी अध्यात्म कर रही थीं। कार्यक्रम का अध्यात्म ठाकुर प्रखाद महाविद्यालय, मथुरा और साहित्य अकादमी, ज्ञान दिल्ली के संयुक्त लक्ष्यावधान में विज्ञान गया। उन्होंने कहा कि साहित्य एवं समाज दोनों एक-दूसरे को प्रभावित करते हैं। वह जात मैंचली साहित्य एवं मैंचल संघाज पर भी लगू होता है मैंचली साहित्य समाज जन का साहित्य है। वह समाज से विकट रूप से संबंधित है। उन्होंने कहा कि मैंचली साहित्य-संस्कृति एवं दर्शन ने स्वतंत्रता-संघाज में यह अन्यतरी भूमिका निभाई। स्वतंत्रता संघाज में मैंचली के साहित्यकार अन्य साहित्यकारों से योग्य नहीं रहे हैं। विषय प्रवर्तन करते हुए मैंचली



गीर्वाई, रामलीला दाम, गमवस्त्राय दाम आदि के गीतों व भजनों में राष्ट्रीय धोन्या का स्वर बहुती सामने आया है। लक्ष्म की लोक परंपरा उत्तरायण एवं बहुल परंपरा राष्ट्रीय अंदोलन में ज़िक्रिय रही है। छोटी ज्ञानिकर, यदुवाय ज्ञा बदुवर, रामवाचार्य, भवद्वीपायन और आदि की कविताओं ने 1919 से 1947 तक राष्ट्रीय अंदोलन को यार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। बीज बहुल देहे हुए साहित्यकार डॉ. लैलितेश निष्ठ ने कहा कि मैंचली

साहित्य में महत्वपूर्ण संघाज से मर्दानी साहित्य का अवाव नहीं है। लोकिन मैंचली इतिहास के लोकों ने इस और पाष्ठों जान की दिव्य और मैंचली साहित्यकारों के साथ जाप नहीं किया। इतिहास वीर पुस्तकों में मैंचली साहित्य में उपस्थित स्वतंत्रता के स्वर वीर जैसा स्वर मिलना चाहिए या, वह नहीं मिलत। उन्होंने इस संदर्भ में विशेष रूप से 1911 में प्रकाशित मैंचली गीत कुमुख की चर्चा वीर और बहाता कि वह स्वतंत्रता की चेतना के संदर्भ में असमी, लैलित एवं बंगला साहित्य की भास्तुता भवा के साहित्य के समकक्ष है। अध्युपिक मैंचली साहित्य में राष्ट्रीय खेतों से अतिरिक्त जिहवी रक्खा है, उसी अवाव वही नहीं है स्वागत बहुल देहे हुए साहित्य अवादीयों, ज्ञान दिल्ली के उत्तरायण एवं मुरीरा जामू ने कहता है कि वह अध्यात्म अज्ञानों के अनुत्त महोसूल को चर्चा की। डॉ. संजय कुमार निष्ठ ने मैंचली गीर्वाई-साहित्य की चर्चा की। डॉ. संजय कुमार निष्ठ ने मैंचली के कागज में प्रकाशित किया जाएगा। इसमें ब्रह्मानुष सभी अलेखों को पढ़कर प्रसार लक्ष पुस्तक के कागज में प्रकाशित किया जाएगा।

हजारों दो वर्षों से अवाव होने वाली?

वह संचालन उग बुजामीक (अकादमीक) डॉ. मुमुक्षु शेष्ठर और यनकाद ज्ञान प्रवानकारी डॉ. कै. गी. यादव ने किया। कार्यक्रम की शुरूआत मंगलवारण (ज्येष्ठ-ज्येष्ठ) के साथ हुई। अविद्यार्थी का अंगवस्त्र, पुष्पगुच्छ एवं गाप से स्वावलम्बन किया गया। स्नेह कुमारी, चंदा विश्व दीन एवं डॉ. गौतम कुमारी ने स्वावलम्बन दीत प्रस्तुत किया।

तात्कालीनी दश में हुई अलेखों की प्रस्तुति

उद्घाटन समारोह के बाद उधम एवं दिल्ली तकनीकी सभा में अलेखों की इन्फ्राट्रायर्ड हुई। उधम तकनीकी सभा में अध्यक्ष डॉ. चौण ठाकुर ने स्वतंत्रता संघाज : मैंचली गीर्वाई-साहित्य की चर्चा की। डॉ. संजय कुमार निष्ठ ने मैंचली के समवेत उत्तरायण वीर विचार ज्ञान किया।

दूसरे दिन शनिवार को पूरे दस-

प्रातःकुमार निष्ठ ने स्वतंत्रता संघाज की विविध सांस्कृतिक और वीडियो फोल्डर विवरक अलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि मैंचली नहीं एक भींचलीक हक्काई नहीं, वह एक सामूहिक इकाई है।

इस अवसर पर मिडिकेट भद्रन डॉ. लमगोत्र चिह्न, पूर्व विद्यानाथज्ञ डॉ. अमोल राज, प्रधानाचार्य डॉ. पारवानद यादव, डॉ. गी. एस. फैसल, डॉ. जवाहर पासवान, डॉ. अमय कुमार, डॉ. गीतम कुमार, से. पूर्व कुमार, चंद्रिकालेश यादव, डॉ. जवेद असरी, डॉ. नीन्द यादव ज्ञा, डॉ. लैलित कुमार चौधरी, सारथ तकन, शीर्ष कुमार चौहान, डॉ. अधोक कुमार, गीर्वाई-कुमार, डॉ. मुमुक्षु राज, डॉ. मिश्निता कुमार, मे. नदीम अहमद असरी, डॉ. अमिताभ कुमार, राजीव कुमार, विकास कुमार, मुमा कुमारी, महत्व कुमारी, एवं शोभा कुमारी, सुषिका सुमन, अलवर कुमारी, डॉ. स्वर्ण मनि, डॉ. ऐशु कुमारी, डॉ. मुलांत कुमार, यज कुमार ज्ञा, डॉ. बलवीर कुमार ज्ञा अदित इर्ष्णीयता थे।

मात्र कल्पना नहीं है साहित्य : डॉ. वीणा ठाकुर

स्वतंत्रता संग्राम : मैथिली साहित्य-संस्कृति ओर दर्शन विषय पर चर्चा



मधेपुरा/आरएनएन। साहित्य मात्र कल्पना नहीं है। यह हमारा सामाजिक इतिहास भी है। साहित्य में समाज निहित होता है। यह बातें सुप्रसिद्ध साहित्यकार प्रोफेसर डॉ. वीणा ठाकुर ने कही।

वे शुक्रवार को स्वतंत्रता संग्राम : मैथिली साहित्य-संस्कृति ओर दर्शन विषयक दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी की अध्यक्षता कर रही थीं। कार्यक्रम का आयोजन ठाकुर प्रसाद महाविद्यालय, मधेपुरा और साहित्य अकादमी, नई दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में किया गया। उन्होंने कहा कि साहित्य एवं समाज दोनों एक-दूसरे को प्रभावित करते हैं। यह बात मैथिली साहित्य एवं मैथिल समाज पर भी लागू होता है। मैथिली साहित्य सामान्य जन का साहित्य है। यह समाज से निकट रूप से संबंधित है।

उन्होंने कहा कि मैथिली साहित्य-संस्कृति एवं दर्शन ने स्वतंत्रता-संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। स्वतंत्रता संग्राम में मैथिली के साहित्यकार अन्य साहित्यिकारों से पीछे नहीं रहे हैं।

विषय प्रवर्तन करते हुए मैथिली परामर्श मंडल के संयोजक अशोक कुमार ज्ञा 'अविचल' ने कहा कि मथुरा संस्कृति एवं दर्शन विदेह की अवधारणा से प्रेरित है, इसमें दासों के लिए कोई गुंजाइश नहीं है। यही कारण है कि हमारे कुछ राजा एवं जिम्मेदारियां अंग्रेजों के साथ रहे हों। लेकिन हमारा संपूर्ण जनमानस संपूर्ण जनमानस अंग्रेजों के विरुद्ध भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में शामिल रहा है। उन्होंने कहा कि मिथिला के साहित्यिकारों ने आजादी की लड़ाई में महती भूमिका निभाई है। लक्ष्मीनाथ गोसाई, रंगलाल दास, रामस्वरूप

दास आदि के गीतों व भजनों में राष्ट्रीय चेतना का स्वर बखूबी सामने आया है। तलाक की लोक परंपरा उपन्यास एवं काव्य परंपरा राष्ट्रीय आंदोलन में सक्रिय रही है। छेदी झा द्विजवर, यदुनाथ झा यदुवर, राघवाचार्य, भवप्रीतानंद ओझा आदि की कविताओं ने 1919 से 1947 तक राष्ट्रीय आंदोलन को धार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

बीज वक्तव्य देते हुए साहित्यकार डॉ. ललितेश मिश्र ने कहा कि मैथिली साहित्य में स्वतंत्रता संग्राम से संदर्भित साहित्य का अभाव नहीं है। लेकिन मैथिली इतिहास के लेखकों ने इस ओर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया और मैथिली साहित्यिकारों के साथ न्याय नहीं किया। इतिहास की पुस्तकों में मैथिली साहित्य में उपस्थित स्वतंत्रता के स्वर को जैसा स्थान मिलना चाहिए था, वह नहीं मिला।

उन्होंने इस संदर्भ में विशेष रूप से 1911 में प्रकाशित मैथिली गीत कुसुम की चर्चा की और बताया कि यह स्वतंत्रता की चेतना के संदर्भ में असमी, तमिल एवं बंगला सहित किसी भी भारतीय भाषा के साहित्य के समकक्ष है। आधुनिक मैथिली साहित्य में राष्ट्रीय क्षेत्रों से ओतप्रोत जितनी रचनाएं हैं, उतनी अन्यत्र कहीं नहीं हैं।